छोटे आदमी को आखिर घर मिला

मैक्स वेलथुइज़

छोटे आदमी को आखिर घर मिला

मैक्स वेलथुइज़
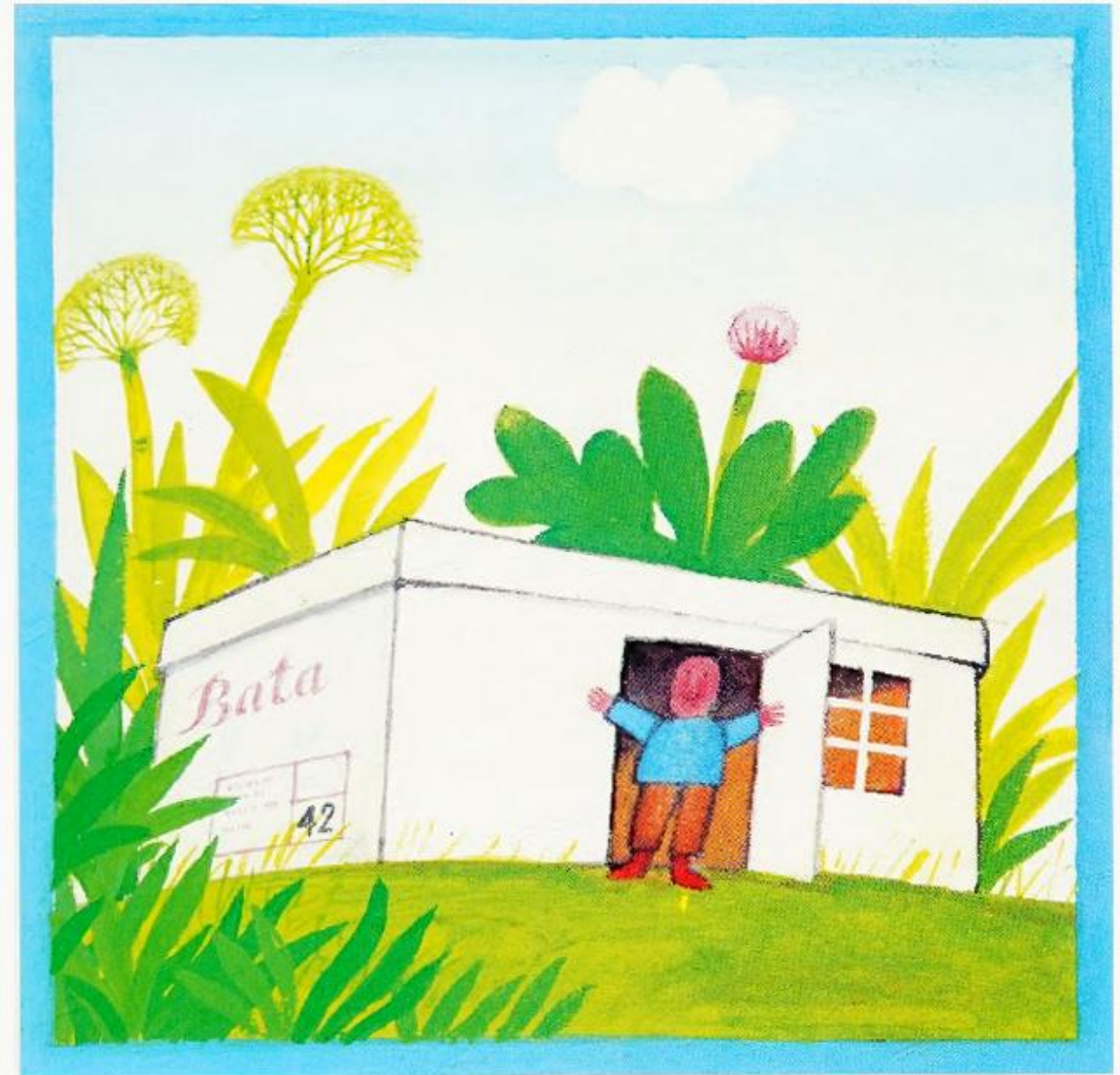
एक छोटा सा आदमी था

वो एक पुराने कार्डबोर्ड के जूते के डिब्बे में रहता था.

वह वहाँ खुश था.

एक दिन बारिश होने लगी.

छोटा आदमी खुश हुआ.

"बारिश मेरे बगीचे के लिए अच्छी होगी,"

उसने कहा.
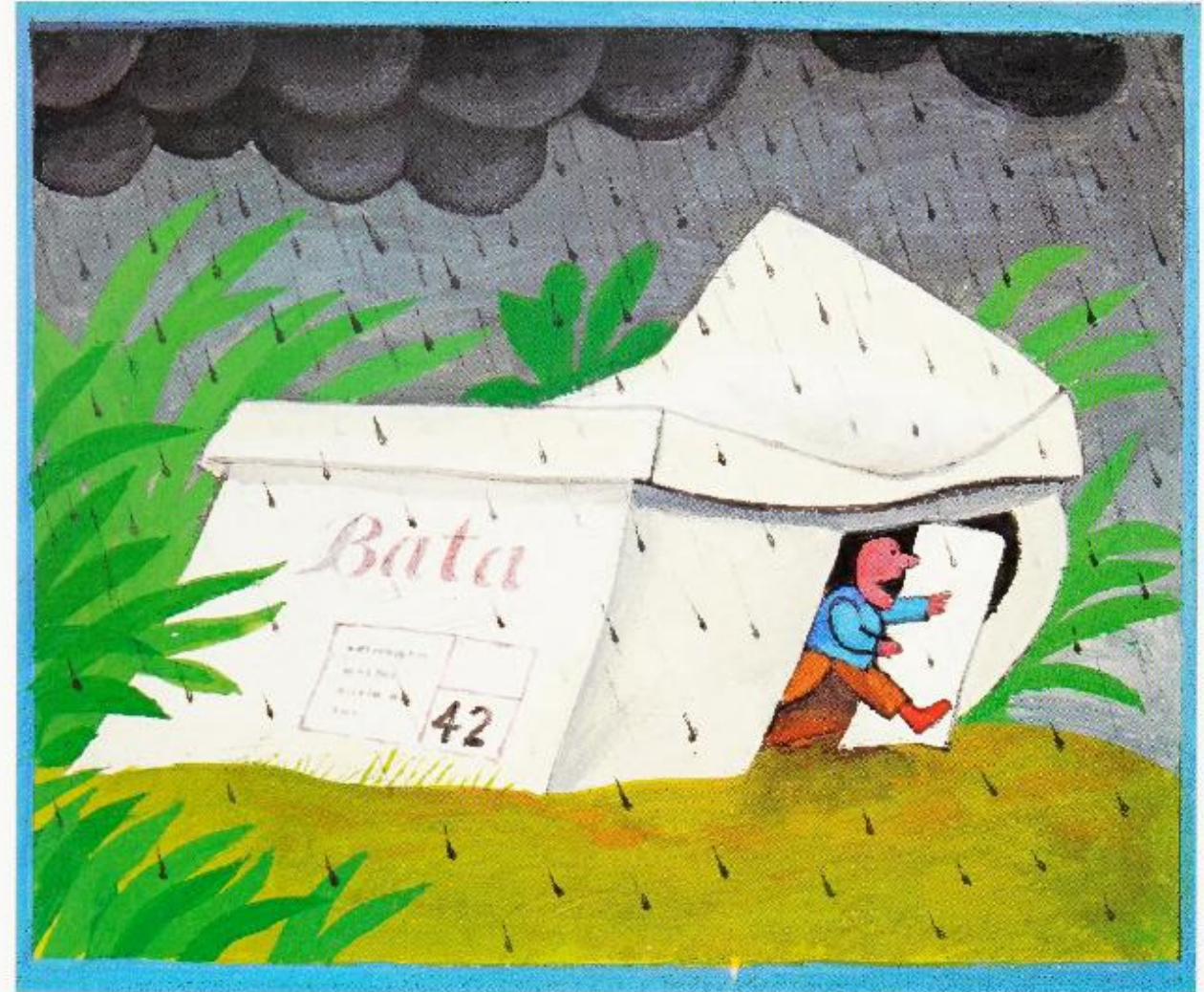
लेकिन तीन दिन और तीन रातों तक बारिश होती रही.

गत्ते का डिब्बा उतनी बारिश नहीं सह पाया.

वह पानी से भीग गया और टूटकर नीचे गिर गया.

फिर छोटे आदमी ने अपनी सारी चीज़ें

एक बंडल में बांधीं और वहां से भाग निकला.

वह बारिश से बचने के लिए एक बड़े पेड़ के नीचे रुका.
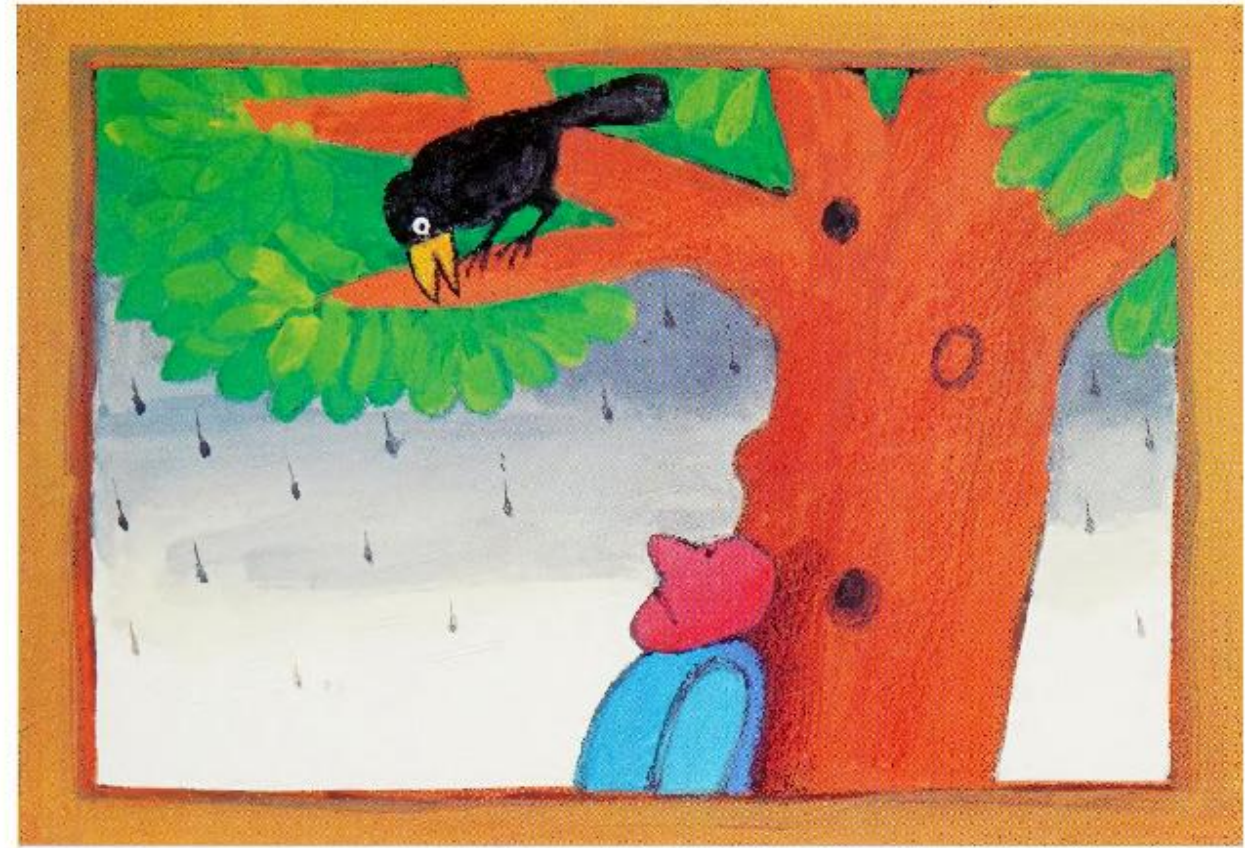
एक पक्षी ने उसे आवाज़ दी:

"अरे ऊपर आओ और हमारे साथ रहो.

ऊपर सूखा है और हम वहां बहुत मज़ा करते हैं."
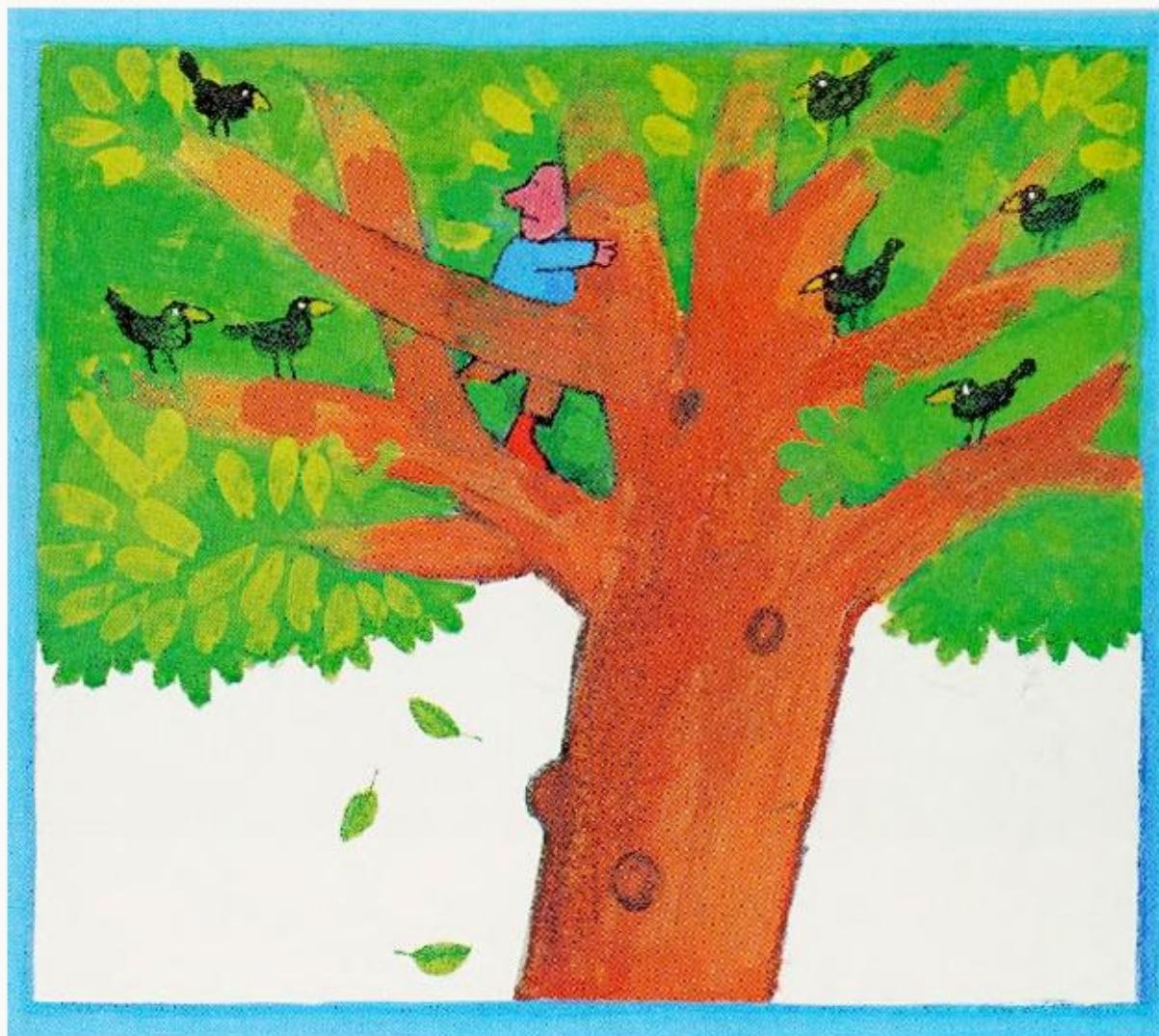
फिर छोटा आदमी पेड़ पर चढ़ गया

लेकिन जल्द ही...

...वह नीचे गिर गया.

"अच्छा," उसने कहा, "देखो मैं कोई पक्षी नहीं हूँ.

बेहतर होगा कि मैं ज़मीन पर ही रहूँ."

इस बीच बारिश रुक गई थी.

सूरज ने उसे फिर से गर्म और सूखा कर दिया था.

"अब मैं अपना समय एक नया घर खोजने

में लगा सकता हूँ,"

उसने खुद से कहा.

रात तक तमाम कोशिशों के बाद उसे कोई घर नहीं मिला.

इसलिए, वह ज़मीन पर लेट गया और वहीं सो गया.

सोते समय उसके सिर के ऊपर केवल आकाश था.

अगली सुबह छोटे आदमी की मुलाकात एक मेंढक से हुई.

"नमस्ते, छोटे आदमी!

मुझे तुम्हारे लिए एक अच्छा घर पता है,"

मेंढक ने कहा.

वह उसे एक खाली कांच के मर्तबान के पास ले गया.

वो एक बहुत ही मजबूत घर था.

आप उसकी सभी दीवारों के आर-पार देख सकते थे.

और कांच का मर्तबान जलरोधक भी था.

लेकिन मर्तबान में एक घंटे के बाद

छोटे आदमी को बहुत गर्म लगा.

वह इधर-उधर देखता रहा.

फिर उसे घास के पीछे एक कॉफी की केतली दिखी.

"यह मेरे लिए एक अच्छा घर रहेगा," उसने सोचा.

लेकिन अचानक केतली की टोंटी से

ततैया का झुंड बाहर उड़ा.

"यहां से चले जाओ," वे भिनभिनाए.

"यह हमारा घर है."

छोटा आदमी जितनी जल्दी हो

सका वहां से भाग निकला.

थोड़ी देर बाद उसे एक खरगोश मिला.

"आओ और हमारे साथ रहो, छोटे आदमी,"

खरगोश ने कहा.

"हमारे घर बहुत आरामदायक है,

और उसमें बहुत जगह है."
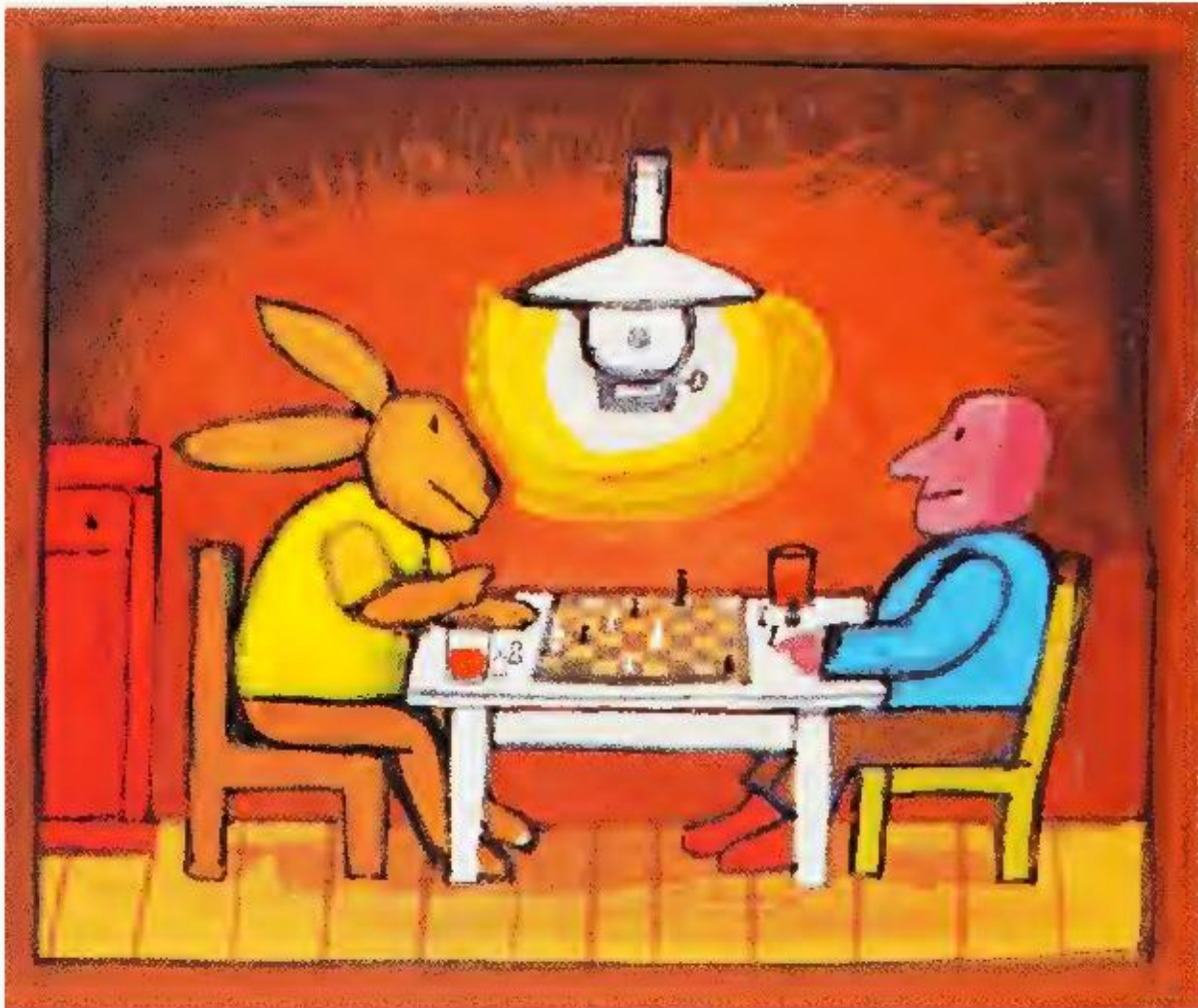
छोटे आदमी को खरगोशों के साथ

रहना पसंद आया.

हर शाम, वे शतरंज खेलते थे

और गाजर का जूस पीते थे.

लेकिन एक सुबह घर में अचानक तेरह बच्चे खरगोश आ गए

फिर छोटे आदमी के लिए कोई जगह नहीं बची.

उसने खरगोशों को उनकी दयालुता के लिए

गर्मजोशी से धन्यवाद दिया

और फिर वहां से चल दिया.

बाहर उसे एक घोंघा मिला.

"कितना अच्छी बात है," उसने सोचा,

"जहां भी जाओ अपना घर साथ लेकर जाओ."
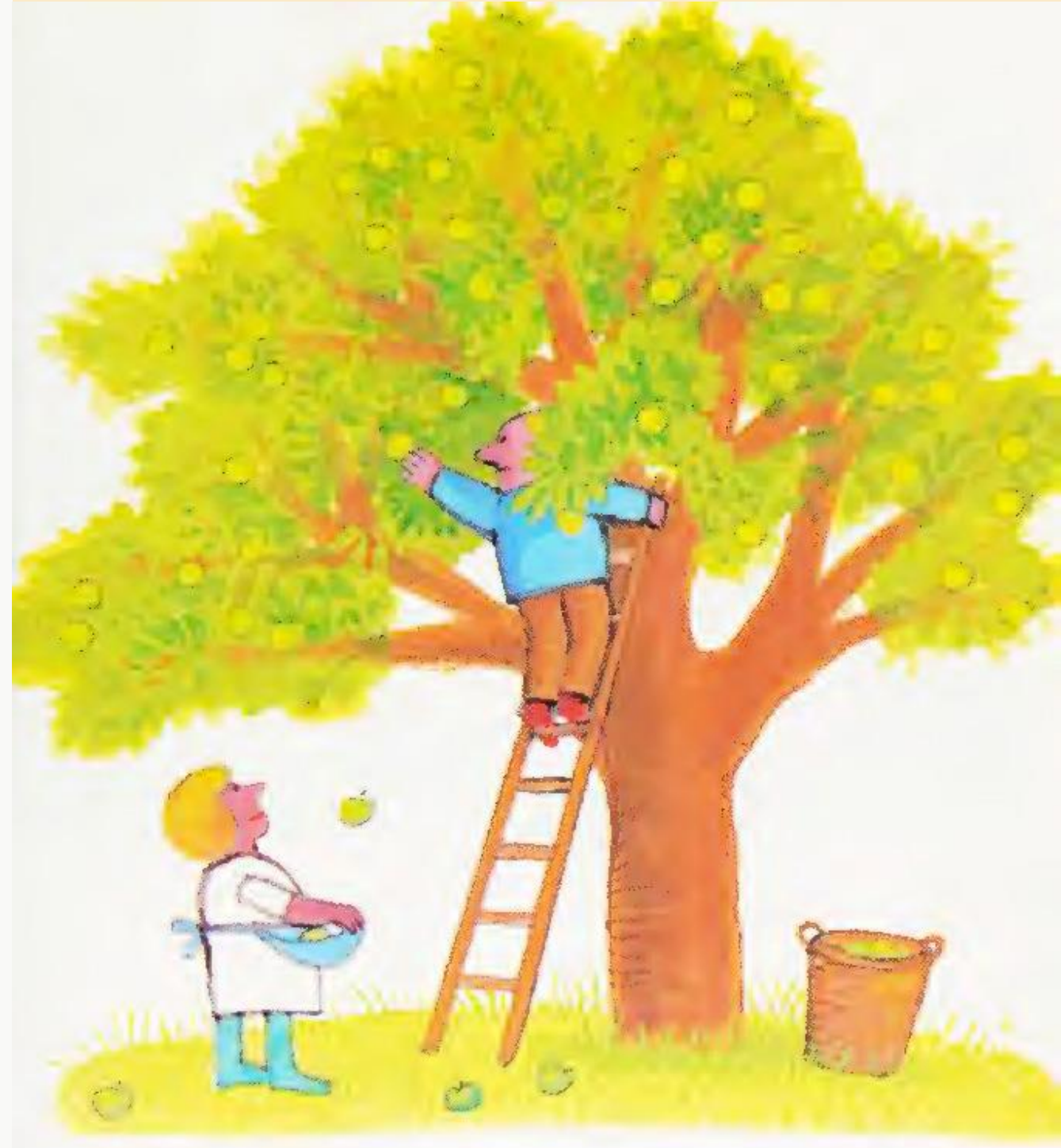
इसके तुरंत बाद उसे एक छोटी औरत सेब तोड़ती हुई मिली,

"क्या मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ," छोटे आदमी ने पूछा,

छोटी औरत ने कहा.

"जरूर, कृपया मेरी मदद करो."

सभी सेब तोड़ने के बाद

छोटे आदमी ने टोकरी उठाई

और छोटी औरत ने उसका बंडल उठाया.

छोटी औरत के घर में उन्होंने अपने खाने के लिए

अच्छा सूप बनाया.

फिर छोटे आदमी ने हमेशा के लिए

वहीं रहने का फैसला किया.

अगले रविवार को उन्होंने सभी जानवरों को

एक पार्टी में आमंत्रित किया.

उस बड़ी दावत में खाने के लिए

बहुत सारी अच्छी चीजें थीं.

सिर्फ एक जानवर गायब था - घोंघा.

घोंघा इतना धीमा था कि वह तभी पहुंचा

जब बाकी सभी जानवर घर चले गए थे.

सौभाग्य से छोटे आदमी और छोटी औरत ने

खासकर उसके लिए

सलाद का एक कटोरा बचाकर रखा था.